वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

नवम्बर 2022

- आरम्भिक दिन
- नीच अनुरागों का रूप और आत्म परीक्षण
- नीच जीवन से मोक्ष पाने वाले महान कर्मचारी
- भाई अमर सिंह जी का पत्र
- अतीत की झलक
- सामाजिक समाचार
- मनुष्य मात्र का सम्बन्ध
- महोत्सव का कार्यक्रम

इस अंक में

धर्म जीवन के इस अंक में इसका पहला लेख आरम्भिक दिन के सम्बन्ध में है, इसको कैसे मनाया जाना चाहिए, इस विषय में बताया गया है। दूसरा लेख नीच अनुरागों का रूप और आत्म परीक्षण है। इस लेख को लिखते समय बार बार मेरी अवस्था मेरे सामने आ रही थी। नीच अनुरागों का कुछ ना कुछ रूप हमने अपने पाठकों के लिए काल्पनिक कहानिओं द्वारा प्रकट करने की कोशिश की है। इसके बाद इस अंक का अगला लेख हमें श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी की अपने नीच अनुरागों पर फतह की सच्ची कहानी ब्यान करता है, कि जो उनके जीवन में भगवान देवात्मा के देव प्रभावों से हुई है।

हमारे सामाजिक जन यह जानकर खुश होंगे कि माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी का 95वां जन्म दिन हमारे सामाजिक जनों ने मिलकर मनाया। उसकी रिपोर्ट भी इस अंक में हम दे रहे हैं।

एक उच्च आत्मा का पत्र और अतीत की झलक भी अंक का हर बार की तरह एक भाग हैं।

हमें बहुत खुशी का अनुभव हो रहा है कि धर्म जीवन अपने कई लेखों से पाठकों का हित कर रहा है, हम परम् पूजनीय भगवान देवात्मा के श्री चरणों में दीनता पूर्वक बार बार प्रार्थना करते हैं कि उनकी कृपा हम पर अधिक से अधिक हो ताकि हम उनके देव प्रभाव जहाँ खुद लाभ करें वहाँ धर्म जीवन के लेखों द्वारा औरों तक भी पहुंचाने का हेतु बन सकें।

देव समाज के महान लेखक श्रीमान पी.वी. कनल साहिब ने एक बार फरमाया था कि "मैं जानता हूँ कि देव समाज में मात्र पांच प्रतिशत लोग ही हें जो देव समाज के साहित्य को पढ़ते हैं परन्तु मैं फिर भी लिखूँगा, उन पांच प्रतिशत लोगों के लिए लिखूँगा और आने वाली नसलों के लिए लिखूँगा।"

आज के ज़मानें में और भी इस साहित्य को पढ़ने वालों का अकाल पड़ा हुआ है। पर मैं विश्वास करता हूँ कि आने वाली नसलें इस साहित्य को अमृत की घूँटों की तरह पियेंगी। यह साहित्य भी उन्हें नया ज्ञान और अनुभव प्रदान करेगा। धर्म जीवन भी आज के ज़माने के उन चंद पाठकों और आने वाली नसलों के लिए एक नम्र प्रयास है।

पाठकों को सूचित किया जाता है कि भगवान देवात्मा का 172वां जन्म महोत्सव 7 दिसम्बर से 10 दिसम्बर 2022 को मनाया जा रहा है, उसके लिए क्या तन, क्या मन सब प्रकार से अपने आप को तैयार करें।

हर बार की तरह हम अपने पाठकों से उनके मूल्यवान सुझावों की मांग करते हैं।

–गौतम गोनियाना

धर्म जीवन

खण्ड 33 अंक 11
नवम्बर 2022
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादिका
सुरजीत बराड़

सह सम्पादक
गौतम गोनियाना

आरम्भिक दिन

जैसे कि पाठकों को सूचित किया गया है, परम पूजनीय भगवान का पावन 172वां जन्म दिन 7,8,9,10 दिसम्बर को डेराबस्सी के निकट हर वर्ष की तरह देवी नगर में स्थित देव धर्म आश्रम में मनाया जाएगा। 9 दिसम्बर को आरम्भिक दिन गुरू महाराज के जन्म दिन के ठीक एक महीना पहले मनाया जाता है। सुबह भजनों का गान किया जाता है और कुछ देव वाणी का पाठ किया जा सकता है।

गुरू महाराज के सम्बन्ध में आरम्भिक दिन किस धूम धाम से मनाया जाता था, वह सुनहरे दिन याद आते हैं, जिनका अनुभव नये सेवकों को हो नहीं सकता। सुबह 5 बजे मोगा मन्दिर के बड़े सेहन में सब सेवक, कर्मचारी विकासार्थी इकट्ठे होते थे। कुछ मोगा निवासी गर्लज़ स्कूल और लड़कों के होस्टल के सब विद्यार्थी उसमें शामिल होते थे, वहां से जलूस की शक्ल में तीन तीन की लाईन में जलूस मोगा की गलियों, बाज़ारों में भजन गाते हुए निकलता था। मार्ग में कहीं कहीं तकरीरें होती थी, और मोगे वालों को निमन्त्रण होता था कि वह हमारे गुरू के जन्म दिन पर आएं। ऐसा कार्यक्रम महोत्सव से पहले हर ईतवार को होता था।

परम पूजनीय भगवान की जन्म शताब्दी पर बहुत बड़ा जलूस निकला था। गुरू महाराज के प्रभावों ने पापों के किले फतह किए थे, उसके परिणाम स्वरूप 5 जनों को बहुत सुन्दर सजे हुए घोड़ों पर बिठाया गया था। बैंड बाजे के साथ वह घोड़ों पर सवार होकर आगे 2 जा रहे थे, इनमें मेरे श्रद्धेय पिता जी, श्रीमान रूप चन्द जी, श्रीमान गुरूबचन सिंह जी नम्बरदार, श्रीमान सुरजन सिंह जी, जिनका मल्लेका में मैंने ज़िकर किया शामिल थे, एक जन और थे, जो मुझे याद नहीं। इसमें भी कुछ ग़ल्ती हो सकती हैं क्योंकि मैं उस समय 12 वर्ष की थी। वह नज़ारे सदा के लिए खत्म हो गए। मैं अपनी खुशकिस्मतीं समझती हूं कि समाज का यह सुनहरा युग तो मैंने देख लिया।

अब हम अयोग्य ऐसा कुछ तो नहीं कर सकते क्योंकि हम सब बिखर गए हैं, परन्तु कुछ साधन तो हम कर सकते हैं।

1. आरम्भिक दिन पर भजनों का गान वा पाठ

2. हर ईतवार को भजनों का गान व किसी ग्रन्थ का पाठ।

3. प्रतिदिन कम से कम एक घण्टा गुरू महाराज के ग्रन्थों का पाठ।

4. देव वाणी के नोट का पाठ।

5. गुरू महाराज से पाए उपकारों को लिखने का साधन उनके श्री चरणों में दिली भावों से प्रार्थना करके देव प्रभावों को पाने का साधन।

6. देव प्रभावों को पाकर अपनी नीचताओं को देखने वा उनसे निकलने का यत्न करने का साधन।

इन साधनों में से गुज़रकर अपना हृदय शुद्ध करके हम महोत्सव से अधिक से अधिक लाभ उठा सकते हैं।

भगवान रचित ग्रन्थ विशेष रूप से आत्म कथा, मुझमें देव जीवन का विकास, आद्वितीय त्याग वा जीवन कथाएं विशेष हैं।

इन दिनों हम और जनों तक भी पूजनीय भगवान की महिमा पहुँचा सकते हैं। जहां आप अपने परिवार समेत पधारें, वहां और जनों को भी लाने का प्रयत्न करें पता नहीं आपके संग्राम से कितने जनों का भला हो सकता है।

आरम्भिक दिन पर 9 नवम्बर 1917 को परम पूजनीय भगवान ने अपना आर्शीवाद दिया था: -

महा यज्ञ के दिनों में तुम में से जो - जो जन देवात्मा के सम्बन्ध में एक वा दूसरे प्रकार के सच्चे साधन करने के योग्य बन चुके हों, उनके ऐसे साधनों की सफलता के लिए मैं आर्शीवाद देता हूँ, और यह शुभ कामना करता हूँ, कि ऐसे जनों के सच्चे शुभ साधनों में जो और लोग योग दें, उनका भी शुभ हो। सम्मिलित साधनों में योग देने के भिन्न तुम में से जो - जो जन देवात्मा के सम्बन्ध में किसी प्रकार के निज के कोई साधन कर सकते हों, वा करते हों, उनके प्रति भी मैं यह आर्शीवाद देता हूँ, कि उनके वह निज के साधन जहां तक सम्भव हो, सच्चे और सरल साधन हों। अर्थात् वह देवात्मा के सम्बन्ध में जो कुछ पाठ करें, वह उनका पाठ विचार पूर्वक हो। उस पाठ के समय उसके विषय पर भलीभांत ध्यान हो। उस पाठ के समय देवात्मा की देव ज्योति उन्हें प्राप्त हो और उसके द्वारा उन्हें वह सत्य दिखाई दें, जो उस लेख में वर्तमान हों। वह जो कुछ शुभ कामना करें, वह उनकी उच्च भाव विहीन केवल शब्दों की कामना न हो। देवात्मा के सम्बन्ध में किसी पुस्तक के पाठ वा श्रवण से वहीं तक किसी जन का शुभ हो सकता है, जहां तक उसके भीतर जो हितकर सत्य वर्तमान हों, वह उस पर पर प्रकाशित हों। उसके द्वारा उसका कुछ अज्ञान दूर हो वा कोई मिथ्या विश्वास नष्ट हों, अथवा उसमें जो नीच गति नाशक वा उच्च गति दायक भाव वर्तमान हों, ऐसे उच्च प्रभाव प्राप्त हों। ऐसा हो, कि देवात्मा के सम्बन्ध में तुम में से जिस - जिसने अब तक अपने द्दय को जिस जिस नीच भाव के द्वारा परिचालित हाकर आत्म जीवन नाशक चिन्ताएं वा अन्य क्रियाएं

की हों, उनका तुम्हें इन दिनों में साधनों के द्वारा विशेष रूप से बोध हो और उसके सम्बन्ध में ऐसी गतियों के द्वारा नेचर के अटल नियमानुसार आत्मा जिस प्रकार अन्धा और रोगी बनता है, उसका भेद तुम पर प्रगट हो और उसके लिए तुम्हारे हृदयों में सच्ची घृणा और सच्चा कष्ट उत्पन्न हों, और जिस प्रकार शारीरिक मृत्यु के बोधी होकर तुम अपनी शारीरिक मृत्यु से डरते हों और उससे बचना चाहते हो, उसी प्रकार तुम्हें अपने अपने आत्मा की मृत्यु का बोध और उसके लिए तुम्हारी जो गतियां मृत्यु दायक हैं, उनसे सच्चा भय उत्पन्न हो और उसमें उद्धार लाभ करने के लिए तुम्हारे हृदय में आकांक्षा जाग्रत वा उन्नत हो और तुम क्या अपनी मोक्ष और क्या अपने उच्च विकास के लिए देवात्मा के साथ अपने आत्मिक सम्बन्ध को अधिक से अधिक सत्य रूप से उपलब्ध करने के योग्य बनो। मैं बार-बार आकांक्षा करता हूँ, कि तुम्हारे क्या सम्मिलित, क्या निज के साधन ऐसे हों, कि जिनमें देवात्मा के देव प्रभाव तुम्हें प्राप्त हों, और तुम उसके सम्बन्ध में अपनी एक वा दूसरी नीच क्रियाओं और हीनताओं को उपलब्ध कर सको। और तुम इस सत्य को भी देख सको, कि **यदि देवात्मा के साथ तुम्हारा अनुराग मूलक यथेष्ट सम्बन्ध स्थापन न हो, तो इससे तुम्हारे आत्मा की क्या क्या हानि है।** यदि धन सम्पत्ति, मान बड़ाई, प्रशंसा आदि से अन्धे बनकर तुम अपने आत्मा के मुख्य उद्देश्य को भूल जाओ वा उसके देखने के योग्य न रहो, तो तुम्हारे लिए कैसा दुर्भाग्य का विषय है! क्या यह सच नहीं, कि नेचर तुम्हारी आँखे खोलने के लिए बार-बार ऐसी घटनाएं पैदा करती है, कि जिनके द्वारा तुम पर यहां के नाना पदार्थों और सम्बन्धियों की असारता प्रगट करती है, और पुकार-पुकार कर कहती है, कि जिस धन वा सम्पत्ति के पीछे तुम अन्धे बनते हो, जिस सन्तान के मोह में तुम अन्धे बनते हो, अन्य सम्बन्धियों के मोह में फंसकर अन्धे बनते हो, नाम और इज़्जत के मोह में फंसकर अन्धे बनते हो, यहां कि वह सब चीज़ें और सम्बन्धी कि जिनके पीछे तुम अपने आत्मा का खून करते हो, मैं एक दिन तुम से अवश्य छीन लूंगी और तुम इस मोह से अपने आत्मा का जो कुछ पतन कर रहे हो, उसका तुम्हें महा भयानक फल दिखाकर बताऊंगी, कि तुम कितने महा मूर्ख और अन्धे थे। ऐसा हो कि तुम्हें देवात्मा की देव ज्योति मिले, जिसमें आत्मा और उसके जीवन की सत्यता प्रकाशित होती है और यह तत्व दिखाई देता है कि मनुष्य के अस्तित्व में उसका आत्मा ही एक मात्र सार पदार्थ है और इस आत्मा का जो सच्चा और पूर्ण रक्षक और जीवन दाता है, वही मुख्य वा मूल सम्बन्धी है। इन दिनों में महा यज्ञ के साधनों के द्वारा जहां तक इस प्रकार के सत्य और सार तत्व तुम पर प्रगट हों और तुम्हारे हृदय में कोई उच्च परिवर्तन पैदा हो, वहां तक तुम्हारे आत्मा का भला हो सकता है। मैं आर्शीवाद देता हूं, कि इन महायज्ञ के दिनों में तुम्हारे ऐसे साधनों से जो कुछ और जितना शुभ सम्भव हो, वह शुभ तुम्हें प्राप्त हो।

-सुरजीत बराड़

नीच अनुरागों का रूप और आत्म परीक्षण

देव समाज में आकर साधारण अधिकारी जनों के मोटे पाप और मोटे मिथ्या विश्वास चले जाते हैं। उसके जीवन से कुछ न कुछ अच्छे काम भी कभी कभी निकल आते हैं। इससे देव समाज के सेवक इस भ्रांति में फंस जाते हैं कि वो धर्म के मार्ग पर चल रहे हैं। परन्तु भगवान देवात्मा फरमाया करते थे कि "केवल मोटे पापों से बचना काफी नहीं हैं।" दरअसल धर्म का मार्ग वा जीवन पथ 'मोक्ष और विकास' का पथ है। यहां मोक्ष का अर्थ नीच अनुरागों से मोक्ष है। अगर हमें यह ज्ञान न हो कि हमारे अन्दर कौन-2 से नीच अनुराग हैं और कितनी मात्रा में हैं तो हम उनसे बच कैसे सकते हैं? इसलिए हम हमारे पाठकों के लिए रोचक काल्पनिक कहानियों के द्वारा इन नीच अनुरागों में से एक का रूप प्रकट करने की कोशिश कर रहे हैं। इन कहानियों के अंत में हम कुछ Points भी दे रहें हैं कि जिनसे हमने आत्म परीक्षण (अपने अंदर देखना है) करके देखना है कि हम कितने इन नीच अनुरागों के दास हैं। इस लेख में हमने स्वाद अनुराग को मुख्य रखकर कहानियां लिखी हैं।

स्वाद सुख अनुराग : हमारे एक मित्र हैं लालू प्रशाद जी। खाने पीने के शौकीन हैं अभी स्कूल में पढ़ते हैं। लालू के बड़े भाई कालेज जाते हैं, लालू का स्कूल दो बजे खत्म होता है जबकि उनके भाई का कालेज चार बजे तक होता है। इसलिए वो अपने बड़े भाई से दो घंटे पहले स्कूल से वापिस आ जाते हैं। आज माँ ने घर में खीर और पुए बनाए हैं। लालू ने अपने हिस्से के खीर पुए खा लिए हैं। माँ ने लालू के बड़े भाई के लिए कुछ पुए और खीर रख दी है ताकि जब वो वापिस आए तो खा ले। लालू का मन अभी ललचा रहा है वो धीरे से उठता है और अपने भाई के हिस्से के खीर पुओं में से आधे खा जाता है। जब सुबह लालू स्कूल जाता है तो मां लालू को कहती है कि बेटा दूध पी ले, पर लालू जी को दूध पीना बिलकुल भी पंसद नहीं है। नाशता करना उसे मुसीबत मालूम होता है पर माँ तो उसे जोर देकर उसे खिला ही देती है। लालू स्कूल पहुंच जाता है। स्कूल में जब आधी छुट्टी होती है अपना लंच बोक्स खोलता है और देखता है कि माँ ने आज तोरी की सब्जी डाली है, देखते ही वो अपना खाने का बोक्स बंद कर देता है। वो भागकर जाता है और स्कूल की कंटीन से बहुत सारी चीजें खरीद कर ले आता है क्योंकि आज ही वो सुबह घर से स्कूल आते वक्त घर के पैसे रखने वाले डिब्बे में से पैसे चोरी करके लाया था जो वो अक्सर ही ऐसा करता रहता है।

अब वो यह सब चीजें मैदान में बैठकर बड़े मज़े से खा रहा है उसने बड़ी स्वादिष्ट चूरण की गोलियां भी खाई। जल्दी जल्दी खाकर वो अपने दोस्तों के साथ खेलने लग जाता है। अभी दस मिन्ट ही खेलते हुए, हुए थे कि घंटी बज जाती है और सारे विद्यार्थी साथियों के साथ लालू जी भी अपना कक्षा में पहुंच जाते हैं। हिसाब के मास्टर जी आते है, आज वो बच्चों को चक्कर (circles) के विषय में पढ़ाएंगें। अभी दस ही मिंट मास्टर जी को पढ़ाते हुए थे कि लालू जी को भी चक्कर आने लगते हैं। उसका दिल घबराने लगता है और वो कै (उल्टी) कर देता है।

मास्टर जी उसे देखते हैं उसे पानी पिलाते हैं और बाकी बच्चों को कक्षा से बाहर जाने को कहते हैं। ललू के घर पर मास्टर जी फोन करते हैं और ललू की माँ स्कूल में पहुंच जाती है। अब ललू की माँ को ललू के साथी विद्यार्थी शिकायत लगाने के लिए उत्सुक दिखाई दे रहें हैं। लो हो गया वही काम कि जिसका डर था। ललू जी के परम मित्र राम प्रशाद कहते हैं आंटी जी! इसने आज तीन पैकेट और चूरण की गोलियां खाई थी। ललू की माँ हैरान होकर पूछती है कि इसके पास पैसे कहां से आए तो परम मित्र बताते हैं कि ये तो हर रोज कँटीन से खाता है। ललू कहता है मैं तो नहीं खाता। मित्र ने आगे से कहा ये अब झूठ बोल रहा है। ललू को अब अपने दोस्त पर गुस्सा आ रहा है। ललू मन ही मन सोचता है कि खाने के वक्त तो यह भी मेरी चीजों से मजे ले ले कर खाता है अब ये मेरी शिकायत लगा रहा है। माँ ललू के कान खींच कर पूछती है अरे शैतान कौन खिलाता है तुझे ये सारी चीज़ें? ललू कोई जवाब नहीं देता। मास्टर जी के धमकाने पर वो बताता है कि मैं घर से पैसे चोरी करके लाता हूँ। दूसरे विद्यार्थी भी बताते है कि घर आते समय भी यह बाहर गोल गप्पों की रेहड़ी पर हर रोज गोलगप्पे खाता है। एक ने बताया कि परसों इसने मेरे से छीनकर चीज खाई थी। ललू की माँ ने गुस्से से कहा घर चल, तेरे पापा से आज तेरी पिटाई करवाऊंगी।

माँ ललू को लेकर हस्पताल जाती है। डॉक्टर बताते हैं कि इसे Typhoid हो गया है इसे कुछ दिन हस्पताल में दाखिल रखना होगा। ललू के पिता भी अपनी दुकान बंद करके डाक्टर के यहाँ आ जाते हैं। ललू को चार दिन के लिए डाक्टर दाखिल कर लेता है। ललू को जब तेज बुखार चढ़ता है और डाक्टर उसे सुई लगाते तो ललू कहता मुझे बचालो आगे से कोई खराब चीज़ नहीं खाऊंगा। मुझे पापा इस बार घर ले चलो। चार दिन बाद कुछ ठीक होकर ललू जी घर पधार जाते हैं। माता पिता जी ललू को उसकी बिमारी की वजह से प्यार दे रहे थे। दस बारह दिनों में ललू जी बिल्कुल ठीक हो जाते हैं। ललू ने अब चोरी करना बंद कर दी है। पर ये क्या? आज ललू जी को समोसे खाने का मन हो रहा है। बीस दिन हो चुके हैं और ललू अपने पापा को दिया हुआ वायदा भूल रहा है कि "अब मुझे बचालो मैं आगे से कोई खराब चीज नहीं खाऊंगा।" सोचते साचते उसने एक समोसा खा ही लिया और सोचा एक समोसे से कुछ नहीं होता, मैं कौन सा रोज रोज खाऊंगा, कभी कभी खाने में क्या हर्ज़ है। समोसा खाते ही रात को उसे खाँसी आने लगती है उसके पहले बिगड़े हुए शरीर को और नुकसान होता है और कई दिनों तक वो रात को सो नहीं पाता, उसकी माँ और पिता दोनों उसे कभी कुछ देते हैं और कभी कुछ ताकि उसकी खाँसी रुक सके।

स्वाद अनुराग के लक्षण (आत्म परीक्षण करो कि मेरे अंदर कितना स्वाद अनुराग है)

- स्वाद अनुरागी मनुष्य बार बार खाता है
- ज़रूरत से अधिक खाता है।
- स्वास्थ्य नाशक परन्तु स्वाददार मीठी, नमकीन, तली हुई चीजें खाता है।
- यह जानकर भी कि मैं यह चीज़ खाकर बिमार हो जाऊंगा अपने आपको खाने से नहीं रोक सकता। गलत खा खाकर बिमार होता है और डाक्टरों के पास पैसे लुटाता है।

○ स्वाद अनुरागी चोरी भी करता है चाहे अपने घर से ही कोई चीज़ चुराकर खाए। दूसरों के हिस्से का भी खाता है।

○ स्वाद अनुरागी मनुष्य उन चीज़ों का भी इस्तेमाल करता है कि जो नेचर ने उसके खाने के लिए नहीं बनाई यथा: चाय, काफी, मांस, अंडे, नमक, मिर्च, गरम मसाले, आदि

○ स्वाद अनुरागी मनुष्य हितकर सब्जीयां, फल और कई अन्य पदार्थ इस लिए नहीं खाता क्योंकि उसे फलां फलां सब्जी, फल वा हितकर चीज़ स्वाद नहीं लगती।

○ स्वाद अनुरागी हम सब है कोई थोड़ा कोई ज्यादा। जरूरत है कि हम उसे बढ़ने न दें। खाने पीने में अनुशासित रहें, तो हम रोगों से भी बचे रहेंगे और स्वास्थ्य भी रहेंगे।

– गौतम गोनियाना

नीच जीवन से मोक्ष पाने वाले महान कर्मचारी

श्री देवगुरु भगवान के देव प्रभाव सबसे कीमती चीज़ हैं। जब वो किसी इन्सान के अंदर प्रवेश करते हैं तो नीच अनुराग उड़ने लगते हैं। महा सौभाग्य से अगर कोई मनुष्य इनको लगातार पाने का अधिकारी बन जावे तो उसका सब प्रकार से कल्याण का मार्ग खुल जाता है। हम अपने पाठकों के सामने देव समाज के ब्रती कर्मचारी श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी के जीवन का संक्षिप्त हाल दे रहे हैं कि उन्होंने कैसे लगातार देव प्रभाव पाने के साधन करके अपने नीच भावों को पराजित किया। श्रीमान जी के जीवन का हाल जीवन पथ के राहियों के लिए एक मार्ग दर्शक है।

श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी : श्रीमान देवत्व सिंह जी को सरदार जमीयत सिंह जी द्वारा परम पूजनीय भगवान देवात्मा का शुभ सन्देश मिल चुका था और सन् 1892 ई. में भारत उद्धार व्रत के अवसर पर उन्होंने अपना जीवन भी भगवान देवात्मा के चरणों में भेंट कर दिया था। वे अपनी सारी ताकतें उनके मिशन में खर्च करने लगे। ऐसा करने से श्रीमान जी के घर वालों की ओर से उनकी बहुत विरोधता हुई। श्रीमान जी ने लिखा था कि वो सारा दिन धर्म संबंधियों में काम करके, श्री देवगुरू भगवान के दर्शन करके, उनकी देववाणी सुनकर बहुत देव प्रभाव लाभ करते थे। फिर उन्हें ऐसी जगह जाकर समाज का काम करना पड़ा कि जहां पर न तो धर्म संबंधी थे और न ही श्री देव गुरु भगवान ऐसी अवस्था में उनके सामने थे इसलिए उनके भीतर जो श्रद्धा और आकर्षण का भाव उत्पन्न और विकसित हुआ था वो धीरे - 2 मरने लगा। यहां तक कि स्वयं श्री देवगुरु भगवान के संबंध में कि जिनके लिए श्रद्धा और आकर्षण पैदा होने से वे नौकरी और दुनियादारी छोड़कर आए थे उनके लिए कोई आकर्षण न रहा और देव प्रभावों के आने का मार्ग उनके लिए बंद होने लगा। उनके भीतर अहं अनुराग बढ़ने लगा। श्री देवगुरू भगवान ने सन् 1903 में एक लेख लिखा जिसका शीर्षक था "मेरे धर्म संबंधियों की अवस्था" परन्तु श्रीमान जी ने घृणा से उस लेख को उठाकर ऐसी जगह रख दिया कि जिस जगह उनकी नज़र न पड़े। फिर श्रीमान जी के जीवन में कैसे उच्च परिवर्तन आया, उन्होंने अपने आपको देव प्रभावों का भूखा किस तरह बनाया, कैसे वो देव समाज के

महानतम कर्मचारी बने, इसके विषय में आवश्यक ब्यान हम धर्म जगत के यात्रियों के लिए यहां प्रस्तुत करते हैं। श्रीमान जी लिखते हैं :

"सन् 1904 के गालिबन मई मास में पूजनीय भगवान ने मेरी घमंड और स्वेच्छाचारिता मूलक कई एक निहायत क्लेशदायक गतियों से कई दिन तक लगातार चोटें खाते रहकर, एक दिन मुझे अपने श्रीचरणों में बिठाकर मेरी उपरोक्त महानीच और निहायत कृपापात्र अवस्था और उससे अपने क्लेश पाने के विषय में ऐसे जोरदार शब्दों में प्रकाश किया कि उनकी मोक्षदायिनी शक्ति के नीच गति विनाशक देव प्रभाव मेरे हृदय पर सचमुच तीर की न्याईं जाकर लगे और मैं उनके आघात से घायल होकर इस कदर ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला चिल्ला कर रोने लगाा कि मेरी चीखों की आवाज़ सुनने वालों में से एक ने यह समझा कि हो न हो इसे तो किसी प्रिय संबंधी के मर जाने की खबर मिली है और उसी से यह इस कदर दर्दनाक आवाज़ से चिल्ला रहे हैं। ऐसा मालूम होता है कि उस समय मोक्षदाता भगवान के देव प्रभावों ने मेरे आत्मा में प्रवेश करके मेरे भीतर ऐसा परिवर्तन पैदा कर दिया कि मैंने अपने दिन में अपने साधन में जहां एक तरफ प्राय: एक घंटे तक प्रतिदिन नियमित रूप से विविध अंगों में पूजनीय भगवान के उपकारों को अपने सामने लाकर उन्हें लिखना शुरू कर दिया, वहां दूसरी तरफ प्रतिदिन नियमित रूप से ही अपने घमंड और स्वेच्छाचारितता मूलक विविध नीच गतियों की महाभयानक और हानिकारक छवि को सामने लाकर और उसे घृणित बोध करके उसके विषय में भी प्राय: डेढ़ घंटे तक लिखने का साधन शुरू कर दिया। यह सब साधन तब से लेकर आज तक.....(8-06-1920 ई.) निरंतर रूप से बहुत बेहतर.... और अधिक लाभदायक तौर से पूरे होते हैं।"

अहं अनुराग से मोक्ष के साधन

श्रीमान जी लिखते हैं : अहं विषयक साधनों को पूरा करने के लिए मैं :

1. वर्षों तक अपने झूठे बर्तन आप साफ करने और अपने कमरे में आप झाड़ू देने का साधन करता रहा हूं।
2. अपनी हीनताओं और नीचताओं को सामने लाकर अपनी निहायत नीच और घृणित तस्वीर के विषय में लिखने का वर्षों तक साधन करता रहा हूँ।
3. भगवान के संबंध में अपनी अहं मूलक नीच गतियों को सामने लाकर अपनी निहायत नीच और घृणित छवि के विषय में लिखने का साधन करता रहा हूँ।
4. दूसरों की बात में आकर दखल देने और कोई बात अपने को आती हो तो उसे दूसरों पर अवाश्यक रूप से थोपने से अपने आप को रोकने का साधन करता रहा हूँ।
5. वर्षों तक प्रतिदिन प्रात: काल अपने साथ काम करने वालों के दरवाजों पर पहुँच कर भूमि पर सिर रखकर उन्हें प्रणाम करता रहा हूँ।

"ऐसा करने से मुझे बहुत लाभ हुआ है। मेरा अहं घटा है।" यहां तक कि बहुत बार अपने से छोटों के संबंध में भी अपनी ज्यादतियों को अपने आप देखने और उन्हें बोध करके उनसे उद्धार लाभ करने का साधन करता हूँ।"

इन साधनों के फलस्वरूप श्रीमान जी किस लोक में पहुच गए, इस विषय में वह स्वयं लिखते हैं:

"मैं देखता हूँ कि भगवान कि अपार कृपा से इस विषय में मेरी सारी काया पलट गई। मेरे अहं के महाभयानक और महाविनाशकारी परदे फट गए। मेरे भीतर सत्य ज्योति का प्रकाश हुआ। जहां मेरे हृदय में अमावस्या की काली रात थी वहां दिन चढ़ गया। मेरी शक्ल जैसी मैली, भूतनी, विविध संबंधों में अपराधी और कर्जाई थी, वैसी ही मुझे दिखाई देने और उपलब्ध होने लगी। मेरा घमंड टूटा। मेरी झूठी आकड़ नष्ट हुई और मैं क्या अपने आप को और क्या अपने परम और सर्वहितकर्ता भगवान को अपने अपने प्रकृत रूप में देखने के योग्य हुआ। मेरे भीतर सच्ची श्रद्धा और स्वर्गीय दीनता का भाव पैदा हुआ। मेरे लिए विविध प्रकार के हित का द्वारा खुल गया और अब मैं एक एक समय अपने लिए जीवन के नाना अंगों में बेहद बरकतों का भण्डार खुला हुआ देखकर अपने सौभाग्य की कोई सीमा नहीं देखता और इस सौभाग्य के दाता भी देव गुरू भगवान को भी बार बार धन्य धन्य कहता तृप्त नहीं होता।

अन्य विविध नीच अनुरागों से मोक्ष

श्रीमान जी लिखते है :

1. "मैं छोटी उम्र में ही कुसंग में पड़कर और विविध मिथ्या विश्वासों के वशीभूत होकर और जगतों के भिन्न पशु जगत् के संबंध में किस प्रकार से क्लेशदायक और हानिकार साबित होता जा रहा था, वह "सब नज़ारे एक एक करके मेरे सम्मुख आने लगे। मैंने जिन पशुओं को अपनी दुष्ट प्रकृति से सताया और सख्त क्लेश पहुंचाया, हां कितनों को जान से मारा था और जिन पाप कर्मों को करते समय न केवल मुझे कभी कोई दुःख नहीं हुआ था, किंतु जिन्हें करके मैं बहुत फूलता और खुश हुआ करता था और जिन्हें करके मैं बिल्कुल भूल चूका था, वह सब एक एक करके मेरे सामने आने शुरू हुए और मैं उन्हें देख देखकर बहुत दुःखी और शर्मसार होने लगा..... मैंने एक एक करके उन घटनाओं को लिखना और उनके संबंध में यथा सम्भव उनका परिशोध करना शुरू किया। जिस जिस श्रेणी के पशुओं के संबंध में मैंने उपरोक्त एक वा दूसरी प्रकार का अपराध व अत्याचार किया था, उस श्रेणी के पशुओं की मैंने सेवा की।

2. "दूसरी प्रकार के मेरे मोक्ष विषयक साधन अपनी उन नीच गतियों के संबंध में थे कि जिनमें मैंने विविध समयों में एक व दूसरे जन की कोई वस्तु अपहरण की थी।"... मैं जब फ़िरोज़पुर हाई स्कूल में पढ़ा करता था तो जिस छात्रावास में मैं रहता था उसके पास ही छात्रावास के साथ लगता एक फकीर का डेरा था जिसमें कुछ बेरी के वृक्ष लगे हुए थे। उन वृक्षों की जो शाखें छात्रावास की तरफ फैली हुई थीं उनमें जब बेर लगते तब..... मैंने कई बार रात के समय उन वृक्षों से बेर तोड़कर खाए थे। मेरा वह कर्म मेरे सामने आकर मुझ पर फटकार डालने लगा..... (श्रीमान जी ने फिर फिरोजपुर पहुँचकर उस फकीर को नकदी देकर अपनी उस बात के लिए माफी मांगी)

उसी काल में ..... साथी लड़कों के साथ मिलकर..... खेतों में से खरबूजे और तरें चुरा लाता था और एक दो बार मेलों में जाकर एक व दूसरी दुकान से सौदा लेते समय दुकानदार से नज़र बचाकर उसकी कोई चीज़ उठा लाया था। मैंने चाहा कि मैं उनकी कीमत मालिकों तक पहुँचाऊं परन्तु मैं उनका कोई पता नहीं जानता था,

इसलिए मैंने उनकी कीमत धर्म कार्य में दान करके अपने मैल को धोने का यत्न किया। इस समय भी वह सब घटनाएं मेरे सामने आकर मुझे शर्मिन्दा कर रही हैं।

3. मेरे तीसरे प्रकार के मोक्ष विषयक साधन मेरी उन नीच गतियों के संबंध में थे जो मैंने अपने बड़ों, शिक्षकों अथवा परिचालकों के संबंध में की थीं। मैंने अपने मिथ्या घमंड और बढ़े हुए अहं के वशीभूत होकर अपने बड़ों, शिक्षकों व परिचालकों के संबंध में अनेक बार अपमान मूलक अथवा बाध्यतानाशक और उनके लिए बहुत क्लेशदायक जो गतियां की थी उनकी महा हानिकारक छवि मेरे सामने आनी शुरू हुई।

(श्रीमान जी ने अपने माता जी, अपने अध्यापकों, श्री देवगुरू भगवान के संबंध में अपने अहं की गतिओं को देखा और उनका परिशोध किया, उनका वृतांत आप आत्म परीक्षण नामक पुस्तक से पढ़ सकते है)

4. काम अनुराग से मोक्ष पाने के साधनों का जो वृतांत श्रीमान जी ने लिखा है उसका बड़ा भाग यह है :

"मेरे चौथी प्रकार के मोक्षदायक साधन मेरी उन नीच गतियों के संबंध में थे जो मैंने काम वासना के अनुचित अधिकार में आकर विविध संबंधों में की थीं। मेरी यह नीच गतियां इतने प्रकार की, इतनी गहरी और इतने अस्तित्त्वों के संबंध में थीं कि उनके संबंध में मोक्ष विषयक साधन करने में जहां मुझे सबसे अधिक कठिनाई पेश आई, वहां वह साधन दस-बारह वर्ष से लेकर अब तक जारी हैं और अभी एक लम्बे काल तक उन्हें जारी रखने की ज़रूरत मालूम होती है। ..... फिर एक तरफ अपने भीतर ऐसा साधन करने की ज़ोरदार आकांक्षा अनुभव की और दूसरी तरफ अपने भीतर उस साधन के करने की ताकत न देखकर मैं भगवान को स्मरण करके सहायता के लिए बार बार यह प्रार्थना करता कि "हे भगवान! तुम्हारी शक्ति मिले, मेरा कोढ़ दूर हो" तुम्हारी शक्ति मिले, मेरा कोढ़ दूर हो और साथ ही अपनी महानारकीय करतूतों को सामने लाकर अपने मुंह पर थप्पड़ मारता। इस प्रकार के वर्षो के लगातार साधनों से.... और भगवान की अपार कृपा से, मुझे इतना बल मिला कि मैं उस साधन के करने के योग्य हुआ।

"मैंने एक एक करके अपनी सारी ऐसी क्रियाओं को सामन लाकर उसके विषय में लिखने और उनके लिए घृणा और दुख उत्पन्न करने का साधन किया।..... हानिकारक प्रभावों के बोध करने वाली शक्तियां जागृत और उन्नत होते जाने से उन्हें पहचानने और उनसे बचने में उसी तरह सहूलियत होती जाती है जिस तरह रास्ता चलते समय किसी गाड़ी को दूर से ही आते देखकर अथवा उसकी आवाज़ सुनकर आदमी झट एक तरफ हो जाता है और नुकसान से बच जाता है।

"अपनी उपरोक्त महाविनाशकारी विविध नीच गतियों के संबंध में मोक्षदायिनी साधना करने की महा दुर्लभ सामर्थ्य को पाकर और इन साधनों के द्वारा अपने जीवन के लिए विनाश के बहुत मार्ग बंद और अपने लिए कितने ही हित के स्त्रोत खुल गए देखकर मैं बता नहीं सकता कि मैं अपने आप को किस कदर सौभाग्यवान अनुभव करता हूँ। शरीर की किसी रोगी को स्वास्थ्य प्राप्त हो जावे, किसी निर्धन को धन मिल जावे, किसी पद के अभिलाषी को पद लाभ हो जावे, हां शरीर

के विचार से यदि कोई मुर्दा नए सिरे से जिंदा हो जावे और उसे सारी दुनिया की बादशाहत भी मिल जावे, तो भी मैं साफ महसूस करता हूँ कि उसे वह सौभाग्य प्राप्त नहीं होता कि जो भगवान की अपार कृपा से मुझे उपरोक्त सौभाग्य मिला हुआ महसूस होता है और इसलिए मैं इस अद्वितीय और अमूल्य लाभ के लिए भगवान के प्रति धन्यवाद के प्रकाश के लिए कोई शब्द नहीं पाता और क्या इस लोक में और क्या परलोक में जब तक मैं जिंदा रहूं तब तक यदि मैं अपनी सारी ताकतों को भगवान की ही सेवा में खर्च करता रहूं तो भी मैं उनके इस महा ऋण को अपने ऊपर से कभी नहीं उतार सकता।"

– गौतम गोनियाना

अतीत की झलक

लाहौर के तीर्थ स्थानों की रक्षा

सन् 1947 में पाकिस्तान बनने के बाद लाहौर में परम पूजनीय भगवान देवात्मा के पवित्र निवास स्थान देवालय में कोई मुसलमान अफसर अपने परिवार सहित रहने लगा। परम पवित्र देवालय के सामने पूजनीय भगवान की जो समाधि बनी हुई है उसमें जो संगमरमर की प्रतिमा थी। उसमें कई अंगों को मुसलमान गुण्डों ने क्षत विक्षत कर दिया और जिस पवित्र स्थान पर कभी किसी नशे या मांसाहार का प्रयोग नहीं होता था, वहां पर यह कुत्सित व्यवहार होने लगा। देव समाज कौंसल लाहौर छोड़ कर मोगा आ गई थी। पूजनीय देवालय के ऐसे घोरातम अपमान का पता लगने पर लाहौर की अदालत में मुकद्दमा दायर किया गया। एक मुसलमान वकील को मुहमांगी फीस दी गई। इस मुकद्दमें की पैरवी के लिए चार आदमी श्रीमान बाबू अमर नाथ जी एडवोकेट, श्रीमान गुरुवन्त सिंह जी, श्रीमान बिशन सिंह भूटानी और श्रीमान गिरवर प्रसाद जी लाहौर गए। लाहौर में बाबू अमर नाथ जी के परिचित एक बहुत ही नेक और सज्जन वकील थे। यह चारों जन उनके घर ठहरे। जब तक यह उनके घर रहे, तब तक उन वकील साहब के घर वालों ने मांस की कोई चीज़ नहीं पकाई और सब बर्तनों को खूब अच्छी तरह धो कर शाकाहार भोजन तैयार किया। रात को जब हम सोने लगे, तो हमें यह डर महसूस हुआ कि कहीं कोई गुण्डा मुसलमान वारदात न कर जाए। पेशी वाले दिन हम चारों अदालत में पेश हुए। भगवान देवात्मा का नालायक लड़का प्रफ्फुल देव जो मुसलमान बन गया था, वह भी अदालत में आ गया। अदालत का कमरा मुसलमानों से खचाखच भरा था। प्रफ्फुल देव ने अपना मुसलमानी नाम रख लिया था। उसने जज साहब को कहा कि मैं श्री सत्यानन्द अग्निहोत्री जी का बेटा हूँ और देवालय पर मेरा हक है। उसने कुछ पैम्फलेट अदालत में पेश किए और कहा कि इन पैम्फलेट में हजरत मुहम्मद और कुरान शरीफ के विरूद्ध बहुत कुछ लिखा हुआ है। यह सब कुछ देव समाज वालों ने लिखा है। उसकी बात सुनकर अदालत का सारा वातावरण हमारे विरुद्ध हो गया। बाबू अमर नाथ जी ने अदालत को बताया कि यह पैम्फलेट हम में से किसी के नहीं लिखे हैं, इसलिए जिसने लिखे हैं, वही जिम्मेदार है। फिर अदालत में विरोधी वकील ने कहा कि यह

देवसमाजी लोग लाखों रुपया हिन्दोस्तान ले गए हैं। यह सब रुपया पाकिस्तान की चीज थी। इस पर अदालत ने हम से कहा अर्थात जब तक सारा रुपया वापस न आ जाएग, तब तक तुम लोग लाहौर छोड़ कर नहीं जा सकते। उन दिनों फील्ड मार्शल आयूब खां का मार्शल ला लाहौर में लागू था। हम ने अदालत से प्रार्थना की कि पंजाब नेशनल बैंक में हमारा हिसाब था। इस बैंक के कुछ आदमी लाहौर में अभी तक बैंक में ही मौजूद है, कृपा करके पता लिया जाए कि हमारा कितना रुपया बैंक में जमा था। अदालत ने पंजाब नेशनल बैंक लाहौर में उस समय तक जो आदमी ठहरे हुए थे, उनके नाम आर्डर भेज दिया कि देव समाज के हिसाब के रजिस्टर अदालत में पेश किए जाएं। अगले रोज़ जब अदालत की कारवाई शुरु हुई, तो पंजाब नेशनल बैंक से तुली साहब जो वहां मैनेजर के रुप में काम कर रहे थे, रजिस्टर ले कर हाजिर हो गए। देव समाज के एकाउंट में केवल पांच सात रुपये जमा थे जज साहब की तसल्ली हो गई। हम 4 लोग तुली साहब के साथ अदालत से बाहर आए। हमने तुली साहब का धन्यवाद अदा किया। उन्होंने हमें एक तरफ ले जाकर बताया कि उन्होंने बहुत सारे बैंक के बेकार कागजात जला दिए थे। उनमें शायद देव समाज के हिसाब किताब के कागजात भी जल गए होंगे। जो रजिस्टर बाकी बचा था, वह मैंने अदालत में पेश कर दिया। बाकि और कोई देव समाज के कागज़ात हमारे पास नहीं थे।

अगले दिन प्रात: काल मैंने सोचा कि लारेन्स बाग की सैर कर आऊँ। लारैन्स बाग की सैर करने के बाद जब मैं लौट रहा था, तो एक मुसलमान नौजवान ने मेरे पास आकर अपनी साईकिल रोकी और कहा क्या तुम वही आदमी नहीं हो कि जो कल अदालत में देव समाज की तरफ से आए थे? मैं डर गया कि इस मुसलमान ने मुझे पहचान लिया है। उसने कहा -डरो मत! मैं पहले हिन्दु था, लेकिन अब मुसलमान बन गया हूँ और परिवार सहित अमुक गली में रहता हूँ। कल मैं भी अपने कई साथियों के साथ अदालत में मौजूद था। हमें पता लग गया था कि देव समाज वालों का मुकद्दमा अदालत में चल रहा है। हमें शक था कि कुछ सिरफिरे मुसलमान आप लोगों को हानि न पहुंचाएं। अदालत में कुछ मुसलमान छुरे ले कर गए थे ताकि जब आप लोग बाहर निकलें तो कतल कर दें। लेकिन हम लोग आप सब के पीछे पीछे थे। और जब आप वकील साहब के घर चले गए, तो हम अपने अपने घर आ गए। हमने उन छुरे बाज मुसलमानों को कह दिया था, कि इन लोगों पर आपने हाथ नहीं उठाना, इसलिए वह निराश होकर चले गए। यह सारी बातें वह हिन्दु से परिवर्तित मुसलमान मुझे वहां सड़क पर खड़े खड़े बता रहा था और कहा मैं रायपुर रानी के हकीम सीताराम जी का रिश्तेदार हूँ। उनको कह देना कि मैं ज़िन्दा हूँ। उसने मुझ से कहा कि आप हमारे घर चलें और खाना खाकर आएं। मैंने कहा वहां आपकी गली में जाना खतरनाक हो सकता है, क्योंकि वहां सब मुसलमान हैं, इसलिए क्षमा चाहता हूं। यह कहकर मैं उन वकील साहिब के घर आ गया, जहां हम ठहरे हुए थे। मुकद्दमें का फैसला हमारे हक़ में हो गया। परम पवित्र देवालय को खाली करवाकर, हमने उसको ताला लगवा दिया और हम हिन्दोस्तान लौट आए।

- गिरवर प्रसाद

धर्म जीवन मई, 95, अंक 5

सामाजिक समाचार

विशेष सम्मान के योग्य श्रीमान बलदेव सिंह जी का 95वां जन्मदिवस

चण्डीगढ़, 10 अक्तूबर 2022 - श्री डॉक्टर नवजोत कालड़ा, संगरूर के सुझाव से आज विशेष सम्मान के योग्य श्रीमान बलदेव सिंह जी का 95वां जन्मदिवस श्रीमान जी के निवास स्थान पर एक सभा के रूप में मनाया गया। सभा में अच्छी संख्या में अतिथिगण विद्यमान थे जो दूर दूर के स्थानों से पधारे थे। इन अतिथियों में श्रीमान जी के परिवारिक जनों के भिन्न सामाजिक जन भी शामिल थे। सब के लिए आते ही चाय और नाश्ते में परांठों का प्रबंध था। भगवान देवात्मा के संबंध में देव स्तोत्र के साथ सभा आरम्भ हुई। 'खुशनसीबी से यहाँ आना हमारा हो गया' भजन का गान हुआ। सभापति श्रीमान बलबहादुर जी थे। सभापति जी ने संक्षिप्त रूप से श्रीमान जी के जीवन की यात्रा का परिचय कराया और श्रीमान जी के प्रति अपने श्रद्धा भाव का परिचय दिया। सभापति जी ने श्रीमान जी के जीवन की घटना बताई कि उन्होंने कैसे घृणा करने वाले धर्म संबंधी की भी बिमारी में मदद की। सभापति जी ने श्रीमान जी के हानि परिशोध के साधनों और **नीच जीवन पर चिंतन** का भी वर्णन किया। काका जी ने श्रीमान जी के विषय में जो कहा था वो भी सभापति जी ने बताया। काका जी ने कहा था कि श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी के बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने प्रचार विभाग अर्थात् जीवनों को बदलने का सबसे बढ़कर काम किया है। सभापति जी ने बताया कि श्रीमान जी दूसरों के गुण देखते हैं। श्रीमान बलबहादुर जी ने बताया कि किस प्रकार श्रीमान जी के अनथक शुभ संग्रामों से उनके तथा अन्य बहुत से धर्म सम्बन्धियों के जीवनों में उच्च परिवर्तन आया है। इसके उपरान्त श्रीमती सुरजीत बराड़ ने अपना भाव प्रकाश किया।

मिसिज सुरजीत बराड़ : सर्वप्रथम उन्होंने दूर दूर से आए जनों का धन्यवाद किया फिर माननीय श्रीमान जी के विषय में बताया कि उनके 95 वर्ष की उमर में से 65 वर्ष गुरू मिशन को समर्पित रहे हैं। शायद समाज में सबसे लम्बा समय उन्होंने गुरू का कारज किया है। इस मिशन के लिए वह पूर्ण वफादार ईमानदार रहे हैं और मिशन के आगे बढ़ाने के लिए उन्हें जो भी त्याग किया करना पड़ा, बसों की भीड़ में सफर करना पड़ा, बिस्तरे और समान उठाकर पैदल चलना पड़ा, घर के सुख आराम छोड़कर अपने बोधों के विरुद्ध घरों में रहना पड़ा, परिवार को कई बार कठिनाई में छोड़ना पड़ा, विरोधताओं को झेलना पड़ा, उन्होंने यह सब कठिनाई सिर पर लीं परन्तु कभी उनके पैर डगमगाए नहीं।

देव समाज से अलग होकर कई योग्य जनों ने आज़ादी से देव समाज का काम करना चाहा, परन्तु कोई सफल नहीं हुआ, इन्होंने गुरु की कृपा से बराबर समाज खड़ी की, पत्रिकाएं सफलता से चलाई, दर्जनों जीवनों में परिवर्तन किया, उनकी मिथ्या, पाप छुड़ाए, घरों में मेल स्थापित किया, इसमें श्रीमान बलबहादुर जी ने पूरा साथ दिया। 5 जगह पर देव समाज के नये सेंटर बनाए। लाखों रूपये दान इकट्ठा किया, भवन बनाया, साहित्य में योगदान दिया, उनके

इस पूरे संग्राम की तस्वीर जब सामने आती है तो दिल उनके आगे झुक जाता है।

मेरी हर प्रकार से उन्नति में सहयोग दिया, परिवार को सदा आत्म सम्मान से जीने के साधन दिए। समाज से कभी कोई पैसा वा बोझ नहीं डाला। समाज के कामों में बहुत व्यस्त रहते हुए भी बच्चों की ज़िम्मेवारी ही नहीं निभाई, उनके अच्छे से अच्छे Careerबनाए, उन्हें परसेवा के लिए उत्साहित किया, उनके यह शब्द "Life Lived for others is a life indeed, otherwise it is a barran waste" बच्चों ने ज़िन्दगी में उतारे हैं।

गुरू की शिक्षा में अवश्यक बातें हैं, उनके देव प्रभावों को पाना, औरों तक पहुँचाना और अपने नीच जीवन से निकलने का संग्राम करना, यह तीनों बातों को इन्होंने अपने जीवन में अपनाया है और इनका जीवन इन साधनों में से गुज़रकर सोना बन गया है। हर रोज़ वर्षों एक अपनी रोज़ाना की गतियों को लिखना, उनमें सुधार करना और अन्त में "अपने नीच जीवन पर चिन्तन" में अपनी नीचताओं को लिपिबद्ध करना, सबसे कठिन काम है, जो इन्होंने दिल की गहराई से किया, इस विशेषता के आगे मैं इन्हें नमन करती हूँ और इनकी दीर्घायु के लिए कामना करती हूँ।

श्रीमान धर्म सिंह चौहान : चौहान जी ने बताया कि जीवन की सफलता उसकी लम्बी आयु में नहीं बल्कि सुन्दर जीवन महत्व रखता है। उन्होंने कहा कि श्रीमान जी लम्बे जीवन के साथ साथ सुन्दर जीवन भी रखते हैं। चौहान जी ने कहा कि श्रीमान जी ने नीच जीवन पर चिंतन करके अपने आपको बनाया है। श्रीमान जी ने मुझे कहा था कि मेरे से कुछ जीवन बनाने के लिए पा लो। उन्होंने संस्कृति का श्लोक भी बोला और उसका अर्थ किया।

श्रीमती सरिता जी भल्ला : श्रीमान जी का संबंध मेरे परिवार से मेरे जन्म से भी पहले का है। हज़ारो सभाएं श्रीमान जी की बचपन से सुनी है। जब मैं छोटी थी और हमारे घर पर सभा होती तो मैं सभापति जी के स्थान पर बैठ जाती। श्रीमान जी मुझे आर्शीवाद देते थे। B.Ed. करने के दौरान श्रीमान जी और आंटी जी के साथ एक दिन खाना खाया था और आंटी जी के पास ही रात को सोई थी। इन घटनाओं का मेरे दिल पर असर है। अगर में यहां ना आती तो इन बातों से वंचित रह जाती।

श्री B.P. सिंह जी : इतिहास के महापुरूषों के हमने दर्शन नहीं किये पर श्रीमान जी के दर्शन कर रहे हैं, इनकी लम्बी आयु हो और हमें इनका आर्शीवाद मिलता रहे।

श्रीमान श्रेष्ठ कुमार जी : श्रीमान जी की सेहत पिछले साल से भी ठीक लग रही है। गुरु महाराज तो अब इस दुनियां में नहीं हैं आप उच्च कर्मचारियों से ही हम गुरु महाराज से जुड़े हुए हैं। श्रीमती सुरजीत बराड़ जी के भाव श्रीमान जी के प्रति मुझे प्रभावित करते हैं। श्रीमान जी की और मेरे चाचा जी की सभाएं मेरे पास Record है और मैं उन्हें सुनता हूँ।

डॉ मन्सा सिंह जी : श्रीमान जी की आयु 95 वर्ष हो गई है। श्रीमान जी ने मुझे 9 - 10 दिन अपने पास रखकर मुझे गुरु महाराज के साथ जोड़ा, जिससे मेरा भला हुआ। इससे पहले 8 - 10 गुरूओं के साथ जुड़ चुका था और मुझे जीवन कुछ नज़र नहीं आया था। अब मैं श्रीमान जी की

कृपा से इस दर से 20 - 25 वर्ष जुड़ा हुआ हूं।

श्रीमान गौतम गोनियाना (लिखकर दे गए थे) : मेरे विशेष श्रद्धा और सन्मान के योग्य श्रीमान जी।

सत्यदेव की जय।

आपके जन्म दिन पर शामिल होकर बहुत खुशी हो रही है। आप मेरे और हमारे सारे परिवार के विशेष उपकारी हैं। आप ही ने सालों साल संग्राम करके हमें भगवान के साथ जोड़ा है। वैसे तो भगवान देवात्मा का प्रत्येक सेवक ही सम्मान के योग्य होता है परन्तु जब मैं आपके जीवन की ओर देखता हूं और आप पर भगवान की कृपा देखता हूँ तब मैं आपके प्रति बहुत सम्मान और उच्च भावों से भर जाता हूँ। आपका जवानी की आयु में भगवान के दर के साथ जुड़ जाना और अपनी सारी आयु उन्हीं के मिशन में लगाना, सालों साल कभी पैदल, कभी बसों, रेलों और कभी अपने साधनों से मीलों का सफर करके भगवान के संदेश को लोगों तक पहुंचाना, भगवान के मिशन के लिए मंदिरों, भवनों का बनाना, उनके मिशन के लिए पैसा - पैसा बचाना, आदि सारा संग्राम मुझे आपके आगे झुकाने के लिए मजबूर करता हैं। शायद मैं आपके सारे संग्राम को कभी समझ ही ना पाऊं। एक और विशेष पक्ष आपके जीवन का मुझे आकर्षित करता है वो है आपके साधन। आपका नीच जीवन पर चिंतन करना, अपने विशेष उपकारियों को याद करना, आपको विशेष बनाता है।

श्रीमान जी! जब आप हमारे घर पर आते थे तब मेरे और मेरे पिता जी को बहुत खुशी होती थी। हमारे ऊपर अजीब नशा सवार होता था। आपका हमें शाबाशी देना, बाजु पकड़ना और आपके थोड़े से शब्द ही हमें खुशी से भरने और उत्साहित करने के लिए काफी होते हैं।

मैं ऐसी शुभकामना अपने लिए करता हूँ कि मुझे आपका आर्शीवाद और पूजनीय भगवान का आर्शीवाद मिलता रहे। मैं आपके उपकारों को सदा याद रख सकूं।

आपका तुच्छ साथी सेवक

- गौतम गोनियाना

सम्मानीय श्रीमान जी के सन्मान में उनका 95वें वां जन्म दिवस मनाया गया यह श्रीमान नवजोत जी के पिता श्रीमान सीताराम जी के परलोक गमन के बाद उनके परिवार की इच्छा के अनुसार मनाया जा रहा है पिछले साल के बाद इस बार श्रीमान जी के जन्म दिन पर धर्म सम्बन्धियों को खुले दिल से निमन्त्रण दिया गया था।

मैं मोहनलाल जी, B.P. सिंह व डॉ० M.S. जी: हम 4 बजे यहाँ से चलकर रात्रि 9 बजे चण्डीगढ़ पहुँचे। यहाँ हमें बस स्टेंण्ड से रसीव करके नियत स्थान पर पहुँचाया गया, रात्रि से लेकर सुबह नाशता आदि बड़ी अच्छी सेवा का प्रबन्ध किया गया। करीब 11.00 बजे हम श्रीमान जी के घर पहुँचे वहाँ कई धर्म सम्बन्धी व उनके परिवारिक जन आए हुए थे, इसके उपलक्ष्य में एक सभा की व बाद में खान-पान की तैयारी पूरी तरह से की। जो भी जन उसमें शामिल होने के लिए आ रहे थे, सबके लिए बड़े चाव से चाय-नाशता की सेवा की जा रही थी। करीब 11:30 बजे के करीब सभा की गई। सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बड़े श्रद्धा सन्मान व शुक्रगुज़ारी भाव से बड़े श्रीमान जी के जीवन के

गहरे पहलुओं का दर्शन करवाया। उसके बाद करीब 5 - 6 जनों ने श्रीमान जी के बारे में व उनके उपकारों के बारे में वर्णन किया। सब जनों ने उन्हें मुबारकबाद दी। बड़े श्रीमान जी यह सब सम्मान पाकर गुरू के आगे ही झुकते रहे। सारा ब्यान उनकी दीनता और बड़प्पन और गुरू महाराज के प्रभावों का उनकी हृदय पर सुनहरे असरों को दर्शा रहा था।

तुच्छ सेवक,

G.K.K.

फिर हार डालकर श्रीमान जी का सम्मान किया गया। धर्म संबंधियों ने श्रीमान जी के साथ फोटो खिंचवाए।

अंत में श्रीमान बलदेव सिंह जी ने कहा कि मैं नहीं चाहता था कि मेरा जन्म दिन मनाया जाए, ना ही देव समाज में ऐसी प्रथा है। देव समाज में त्याग और सेवा की प्रथा है पर डॉ नवजोत जी मेरा जन्म दिन मनाना चाहते थे। श्रीमान जी ने कहा कि जन्म दिन माता पिता का मनाना चाहिए। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी का धन्यवाद किया। जय ध्वनि के साथ सभा समाप्त हुई। उपस्थित जनों का बहुत स्वादिष्ट और बढ़िया खाना परोसा गया।

- एक हाजरीन

मनुष्य मात्र का सम्बन्ध

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का अद्वितीय रूप इस बात से अद्वितीय है कि उनकी शिक्षा का आधार सारा विश्व है। जहां उन्होंने विश्व में जारी अटल नियमों, विकास विनाश की सर्वोत्म विज्ञान पर आधारित शिक्षा दी है, वहां विश्व के सब जगतों के सम्बन्ध में हमारे कर्तव्यों की शिक्षा दी नहीं दी, बल्कि उन्होंने सब सम्बन्धों में आदर्श जीवन जीया है।

आजकल मनुष्य जगत के सम्बन्ध में दिन हैं, मनुष्य जगत इतना विशाल है कि हमें गिणती करनी कठिन है। हमने किन 2 से उपकार पाए हैं, उनकी बहुत लम्बी लिस्ट है। अर्थात :-

हमारे माता पिता, बहन भाई, दादा-दादी, यानि हमारे सब सम्बन्धी।

डाक्टर - जिन्होंने हमें किन किन बिमारियों से निकाला है, सेहत बख़्शी है। अथाह धन रखकर भी हम स्वयं बिमारियों से नहीं बच सकते, उनके प्रति आभार व्यक्त करना गुरू ने सिखाया है।

इंजिनियर - जिन्होंने अपनी निपुणता से बड़ी बड़ी ईमारतें बनाई हैं, उनके द्वारा ही सीखकर स्वयं हम कोई ढांचा खड़ा कर सकते हैं।

आर्कीटैक्ट - जो सुन्दर से सुन्दर डिज़ाईन बनाकर हमारे घरों को सुन्दर रूप देते हैं, उनकी रहनुमाई के बिना सुन्दर घर नहीं बना सकते जो हम चाहते हैं।

मज़दूर - इनकी सेवाओं का तो मोल हम चुका ही नहीं सकते। हर रोज़ 8-9 घण्टे मेहनत करके हमारे महल खड़े करते हैं और खुद सोने के लिए उन्हें मुश्किल से झोंपड़ी भी नसीब नहीं होती, सर्दी में पूरे कपड़े नहीं मिलते। सोने के लिए चारपाईयां नहीं होती। उनकी इस सेवा का

बदला हम दे नहीं सकते, परन्तु जो जन आपके घरों में मज़दूर काम करते हों, तो इतना कर सकते हैं कि उनको चाय कम से कम दो बार दें, यदि साथ कुछ खाने के लिए दें तो वह ऐसे धन्य 2 होते हैं जैसे खज़ाना मिल गया हो। मनुष्य अपने घर पर तो करोड़ों खर्च कर देते हैं, परन्तु उन मज़दूरों को देने में दिल सुकड़ता है। इनके उपकारों को याद करें और जितना हो सके, उनका ध्यान रखें। कोई गर्म वा ठण्डे कपड़े जो आपके काम नहीं आ सकते, उसे दे सकते है। पेंट की खाली बाल्टियां बेचने की बजाए उन्हें दें दें।

हमारे घर के सेवादार – जिन घरों में भी सेवादार रखे हुए हैं, याद करें कि उनकी सेवाओं से हमारा जीवन कितना सुखमय है। यदि बाहर से आकर काम करते हैं तो उनके एक दिन न आने पर आपका जीवन अस्त व्यस्त हो जाता। कई बार मजबूरी में उन्हें छुट्टी करनी पड़ती है तो कई लोग उन्हें डांटते हैं और उन्हें नीचा दिखाते हैं।

जो सेवादार रात दिन घर में रहते हैं, उनकी सेवा तो रात दिन की है। उन्हीं की सहायता से और कामों से आपको छुट्टी मिलती है और आप कोई अपनी वा दूसरों की भलाई का काम कर सकते हैं, उन्हें जितना भी धन्यवाद दें, थोड़ा है। उनके सुख आराम, बिमारी का ध्यान रखें, समय पर पैसों का भुगतान करें।

हमें याद रखना चाहिए चाहे मनुष्य जगत में उनका कितना भी छोटा दर्ज़ा हो, परन्तु छोटे से छोटे जन का भी आत्म सम्मान होता है, उस पर चोट लगने से उनके भी दिल घायल होते हैं, परन्तु वह अपनी रोज़ी रोटी कमाने के लिए मज़बूर हैं।

किसान – किसान हमारे अन्न दाता हैं। जिस कठिनाई से वह फसलें उगाते हैं, वह एक किसान ही जानता है। परन्तु उनकी फसलों पर कभी कुदरती मुसीबतों का कहर पड़ जाता है, कभी सरकारों की ग़ल्त नीतियों से परेशान होते हैं। कभी दलाल उनको लूटते हैं, परन्तु फिर भी वह हम लोगों के लिए अनाज पैदा करते हैं। एक दिन भी उनकी कठिन ज़िन्दगी से गुजरना पड़े तो हम उनकी कठिनाईयों को अनुभव कर सकते हैं। मेरा सिर तो उनको देखते ही झुक जाता है। वह फरिश्ते नज़र आते हैं। वह कर्ज़ में दबे रहते हैं। हमारी सरकारें कितने 2 लाख करोड़ मन्दिरों आदि में खर्च कर देती हैं, पर किसानों का उतना ध्यान नहीं देती, जिससे हमारे अन्नदाता आत्म हत्या करने को लाचार हो जाते हैं। अब मन्दिरों में कई 2 लाख दिये जलाए गए, परन्तु कितनों के घरों में अन्धकार - मयी दिवाली रही होगी। हम मनुष्य होकर मनुष्यों के प्रति इतने निर्दयी कैसे हो सकते हैं?

इसके ईलावा, हमारे वैज्ञानिक, उनकी खोजों द्वारा हमारी सुविधाएं, बिजली, बसें, गाड़ीयां, जहाज आदि ही नहीं हमारे पैर पैर पर उनके अविष्कारों का प्रभाव है।

मनुष्य जगत हमारा इतना उपकारी जगत है, परन्तु सबसे बढ़कर मनुष्य की सब नीच गतियां मनुष्य मात्र के सम्बन्ध में ही होती हैं। अपने अहं, घृणा, स्वार्थ, ईर्षा, द्वेष, अनुचित

पक्षपात, तरह 2 के षड़यन्त्र आदि नीच अनुरागों से मनुष्य अपना नाश करता है और दूसरों का नाश करता है। जाति भेद से हर रोज़ दंगे होते हैं। धर्म के नाम पर नफ़रत फैलाई जाती है, भोले भाले लोगों को गुमराह किया जाता है। इसकी घटनाएं हर रोज़ मिलती हैं।

परम पूजनीय भगवान ने फरमाया है,

"मनुष्य मात्र चाहे वह किसी देश के हों, किसी जाति के हों, किसी सम्प्रदाय अथवा मत के हों, किसी रंग या रूप के हों, कोई भाषा बोलते हों, कैसे ही उनके आचरण हैं, उनके साथ हम बन्धे हुए हैं, उन सब के साथ हमारा सम्बन्ध है। इस सत्य को हमें भली भान्ति उपलब्ध करना चाहिए।" यहाँ पुरूषों के गुण देखने भी ज़रूरी हैं परन्तु उपरोक्त उपकारी भी हमारे नमन करने के योग्य है।

गुरू महराज के इन पवित्र शब्दों को यदि अपना लें, तो आज सब दंगे, फसाद, युद्ध ख़त्म हो जाएं। विश्व में शान्ति वा एकता का राज हो जाए। कैसा सुहावना होगा वह दृश्य। काश! पूजनीय भगवान की अद्वितीय शिक्षा फैले और यह होना जल्दी सम्भव हो।

– सुरजीत बराड

शोक समाचार

बहुत शोक की बात है कि रमेश जी सुपुत्री माननीय श्रीमान रूप चन्द जी की बेटी, देवकी जी और यशपाल जी सिंगला व विजय कुमार जी की बहन परलोक सिधार गई हैं। वह बहुत ही नेक और सरल थी। देव समाज की सेविका तो थी ही, कुछ देर उन्होंने विकासालय में रहकर भी शिक्षा पाई थी। बड़ों की बहुत इज्जत करती थी। अध्यापिक रहीं। बिमारी से निकलकर ठीक हो गई, परन्तु कैसे नमोनियां हो गया और वह हम से बिछुड़ गई। हमारी ऐसी कामना है कि परलोक में सहायकारी उनकी सहायता करें, उनके जीवन का मार्ग खुल सके, परिवार को शान्ति मिले। ऐसी कामना के साथ।

– मंत्री, देव समाज (G)

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। : – श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Mobile : +91 81465-53154

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ (G)
Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh
Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414

Published on 5th of the month

Regd. Postal No.CHD/0077/2021-2023
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

महोत्सव का कार्यक्रम

बुधवार 7 दिसम्बर 2022

प्रवेश सभा – 4.30 बजे सायं

वीरवार 8 दिसम्बर 2022

1– पहली सभा – 9.30 बजे प्रात:

विषय – परम पूजनीय भगवान देवात्मा का परम आवश्यक जीवनदायक सम्बन्ध

2– पब्लिक लैक्चर– 4.00 बजे सायं

3– संगीत सभा – 7.30 बजे सायं

शुक्रवार 9 दिसम्बर 2022 (महोत्सव का विशेष दिन)

सूर्य निकलने के समय जो कि आत्मिक जगत के सूर्य परम पूजनीय भगवान देवात्मा के शुभ जन्म का समय है, बैंड, बाजा, कीर्तन, शुभकामनाएं और जय ध्वनि – 6.30 बजे प्रात:

1– पहली सभा – 8.30 बजे प्रात:

विषय – भगवान देवात्मा का परम लक्ष्य, उसकी सिद्धि के लिए उनका तप, उसके सम्बन्ध में हमारी ओर से कुर्बानियों की आवश्यकता । धन और जन की अपील ।

2– दूसरी सभा – 2.00 बजे दोपहर – बच्चों की सभा और भजन प्रतियोगिता

3– पब्लिक लैक्चर – 4.00 बजे सायं

4– दीप माला – 6.00 बजे सायं

5– आलोचना सम्बन्धी सुझाव (लिखकर भी दे सकते हैं)

शनिवार, 10 दिसम्बर 2022

1– पहली सभा – 8.30 बजे प्रात: सेवक, सेविकाओं का ग्रहण, श्रेणियों में उन्नति तथा पारिवारिक अनुष्ठान

2– भाव प्रकाश

3– देव आरती का गान और जय ध्वनि

नोट :–

1. कृपया सेवक–सेविका अपनी एकाकारियों के साथ शामिल हों ।
2. आवश्यकता पड़ने पर किसी कार्यक्रम में परिवर्तन किया जा सकता है ।
3. यात्रीगण कृपया अपने बिस्तरे, जो ला सकते हैं वह लोग लाएं, बाकी आश्रम से मिल जाएंगे। एक 2 चादर ले आएं तो कृपा होगी।
4. अपने आने की पहले संख्या समेत सूचना देने की कृपा करें।

फोन : 81465–53154, 82838–55959

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री– **Dev Samaj Global**, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने **Surya Laser Den, Chandigarh** से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21–डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Posts